Feast of Holy Family - December 29, 2013

Readings:

R1: **Sir 3:3-7**

R2: **Col 3:12-21**

Gospel: **Mt 2:13-15, 19-23**

वस्त्रों का फैशन आता जाता रहता है। कभी लम्बे तो कभी छोटे, कभी कसे हुए तो कभी ढ़ीले। समय के साथ साथ इनके प्रचलन में भी परिवर्तन आता ही रहता है। कभी–कभी जब हम अपने पुराने पारिवारिक छाया चित्रों (फोटो) को देखते हैं तो उनके ढ़ंग पर अनयास ही मुस्कुरा देते हैं। कभी–कभी हम उन पुराने ढ़ंग को नये रूप में पुनः देखते हैं। आज संत पौलुस हम समस्त ख्रीस्तियों से अनुकम्पा, सहानुभूति, विनम्रता, कोमलता और सहनशीलता आदि के वस्त्र को धारण करने के लिए कहते हैं जिसके ऊपर प्रेम को धारण करना आवश्यक है।

आज चाहे जो भी फैशन हो, चाहे जिस समय का जन समूह हो संत पौलुस समस्त ख्रीस्तियों के आधारभूत वस्त्रों के विषय में कहते हैं। बिना प्रेम के कोई भी ख्रीस्तीय सम्पूर्ण रूप से वस्त्र धारण नहीं किया होता है। आज जब हम पवित्र परिवार का पर्व मना रहें हैं हम अपने परिवारों तथा विश्वासियों के परिवारों को कृतज्ञयता की दृष्टि से देखते हैं जिन्हें छोटे, अधेड़ तथा बुजुर्गों सब की आवश्यकता है।

परिवार कलीसिया का मुख्य स्तम्भ है और इसका आधार है पवित्र परिवार। जब परिवार पवित्र होगा तभी पवित्र कलीसिया का निर्माण होगा। आज का परिवार कल का खज़ाना है इस लिए परिवार के प्रति हम सब की एक विशेष जिम्मेदारी हो जाती है। येसु, मरियम तथा यूसुफ ये तीनों पवित्र परिवार के अभिन्न अंग है जिन पर चिन्तक करके की पवित्र परिवार का निर्माण किया जा सकता है।

ईश्वर परिवार में निवास करते हैं और हम परिवार में जीते हैं। ईश्वर ने मनुष्य का निर्माण पुरूष व स्त्री के रूप में किया और इस प्रकार उन्होंने हमें परिवार में जीने के लिए आमंत्रित किया है। यह एक दैविक योजना है। नाज़रेथ के पवित्र परिवार में प्रेम पूर्ण रूप से देखने को मिलता है। हमें भी अपने परिवरों में उसका अनुसरण करना चाहिए।

येसु, मरियम और यूसुफ के साथ नाज़रेथ में रहने लगे और एक आज्ञाकारी पुत्र बनकर अपनी प्रथम शिक्षा प्राप्त किये। अच्छे गुणों से सम्पन्न हुए। भय परिवार का एक अभिन्न अंग है क्योकि जहा भय न होगा वहाँ श्रद्धा व सम्मान की कमी होती है। बच्चे परिवार के खजाने हैं। यह समय की आवश्यकता है कि सब प्रेम को

समझे। प्रेम ही ख्रीस्तीय मूल्य का आधार है। माता–पिता, पति–पत्नी तथा बच्चों के बीच प्रेम होना अति आवश्यक है। येसु ने अपने सारे गुण नाज़रेथ में अपने माता–पिता से सीखा।

इसमें कोई संदेह नहीं कि परिवार में छोटे–बड़े हर किसी की एक सुनिश्चित भूमिका होती है जिसका समुचित निर्वाह करने से पारिवारिक जीवन सुगमता पूर्वक चलता है पर हर कुछ मानवीय प्रयासों पर ही निर्भर नहीं होता। पूर्ण सफलता के लिए ईश्वरीय या दैविक प्रेरणा तथा सहायता की भी आवश्यकता होती है। यह बात आज के सुसमाचार में हमें देखने को मिलती है कि किस प्रकार से दैवीय प्रेरणा हमें सांसारिक विपदाओं से आगाह कर उनसे निकलने का मार्ग दिखाती है। इसलिए हमें अपने पारिवारिक जीवन की सफलता के लिए ईश्वर को अपने परिवार का एक अभिन्न अंग बनाना होगा जिससे शारीरिक पोषण के साथ–साथ आध्यात्मिक रूप से भी हम पोषित हो सकें।

परिवार एक घरेलू या लघु कलीसिया है। विश्वास का बीज परिवार में ही बोया जाता है जो आगे चलकर वृहद रूप धारण करता है। जो परिवार एक साथ मिलकर प्रार्थना करता है वह एक साथ रहता है। जिस प्रकार जीने के लिए ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है उसी प्रकार पारिवारिक जीवन के लिए प्रार्थना आवश्यक है। सूक्ति ग्रन्थ 22:6 में हमसे कहा गया है – ''बच्चे को सन्मार्ग की शिक्षा दो वह बुढ़ापे में उससे भटकेगा नहीं।''

परिवार ही जीवन की प्रथम पाठ्शाला है। जीवन की किताबों के पन्ने परिवारों में ही पढ़े और समझे जाते हैं। उठना–बैठना, रोना–हँसना, गिरना–उठना सब परिवारों में ही सीखा जाता है। हमें अपने परिवारों को नाज़रेथ के पवित्र परिवार के समान बनाना है और यह तभी सम्भव है जब हम परिवार में ईश्वर को स्थान दें, प्रार्थना विनती बोले, प्रेम से रहें, क्षमा करें तथा क्षमा माँगे और संवेदनशील बनकर जोड़ना सीखें। एक दूसरे के प्रति श्रद्धा विश्वास ज़रूरी है। आदर सम्मान दें। परिवार की समस्याओं को परिवार में ही सुलझायें। सेवा भाव से हम एक–दूसरे की मद्द करें। इस तरह हम अपने परिवार को एक पवित्र परिवार बना सकते हैं।

Rev. Fr. Valerian D'Souza